विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ ,लखीसराय

रूपम कुमारी ,वर्ग दशम्(ब+स)

पाठ्य सहगामी अभिक्रिया

सुप्रभात बच्चों ,

हिंदी साहित्य जगत में आज का दिन कुछ खास है ,क्योंकि आज का दिन हिंदू महान विभूतियों के लिए हमें सदा स्मृत रहेगा ।

आज की पाठ्य सहगामी अभिक्रिया के अंतर्गत इन दो महान विभूतियों की एक एक रचना को मैं दे रही हूं ।

आप इसका वाचन जरूर करें ।

अपनी अभूतपूर्व मधुर शैली द्वारा खड़ी बोली की कविता को जन कंठ तक पहुँचाने वाले समर्थ गीत-ऋषि एवं मधुशाला जैसी अमर काव्य रचना के सर्जक स्व हरिवंश राय 'बच्चन' जी का आज जन्मदिन है तथा आज के दिन ही प्रेम-अनुराग व मानवता के मनहर कवि स्व शिवमंगल सिंह 'सुमन' जी की पुण्यतिथि भी है। सुरलोक को मानवीय कल्पना के दिव्य प्रकाश से सुशोभित कर रहे काव्य जगत के इन दोनों देदीप्यमान पूर्वजों को धराधाम से इस कृतज्ञ वंशज का आकाश भर प्रणाम। 🙏❤️

“अवतार स्वर्ग का ही पृथ्वी ने जाना है,
पृथ्वी का अभ्युत्थान स्वर्ग भी तो देखे” 😍
(बच्चन जी)

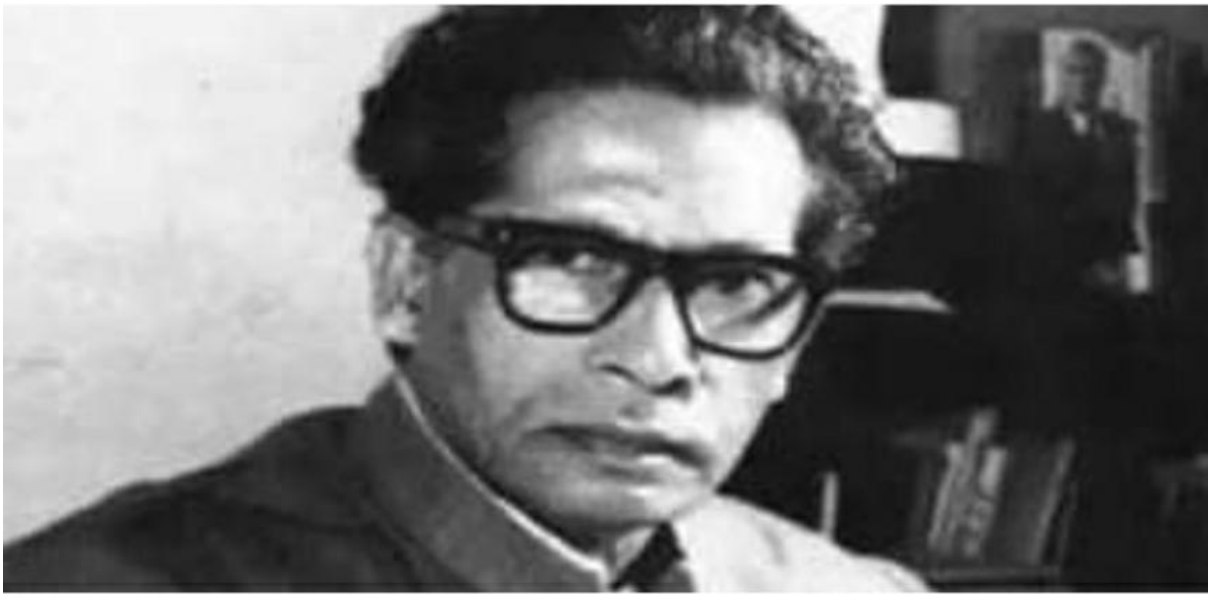

मृदु भावों के अंगूरों की आज बना लाया

हाला,

प्रियतम, अपने ही हाथों से आज पिलाऊँगा

प्याला,

पहले भोग लगा लूँ तेरा फिर प्रसाद जग

पाएगा,

सबसे पहले तेरा स्वागत करती मेरी

मधुशाला।।१।

प्यास तुझे तो, विश्व तपाकर पूर्ण निकालूँगा

हाला,

एक पाँव से साकी बनकर नाचूँगा लेकर

प्याला,

जीवन की मधुता तो तेरे ऊपर कब का वार

चुका,

आज निछावर कर दूँगा मैं तुझ पर जग की मधुशाला।।२।

प्रियतम, तू मेरी हाला है, मैं तेरा प्यासा प्याला,
अपने को मुझमें भरकर तू बनता है पीनेवाला,
मैं तुझको छक छलका करता, मस्त मुझे पी तू होता,
एक दूसरे की हम दोनों आज परस्पर मधुशाला।।३।

भावुकता अंगूर लता से खींच कल्पना की हाला,
कवि साकी बनकर आया है भरकर कविता का प्याला,

कभी न कण-भर खाली होगा लाख पिएँ, दो लाख पिएँ!
पाठकगण हैं पीनेवाले, पुस्तक मेरी मधुशाला।।४।

मधुर भावनाओं की सुमधुर नित्य बनाता हूँ हाला,
भरता हूँ इस मधु से अपने अंतर का प्यासा प्याला,
उठा कल्पना के हाथों से स्वयं उसे पी जाता हूँ,
अपने ही में हूँ मैं साकी, पीनेवाला, मधुशाला।।५।

मदिरालय जाने को घर से चलता है पीनेवाला,

‘किस पथ से जाऊँ?’ असमंजस में है वह भोलाभाला,

अलग-अलग पथ बतलाते सब पर मैं यह बतलाता हूँ -

‘राह पकड़ तू एक चला चल, पा जाएगा मधुशाला।‘।

उपरोक्त काव्यांश ‘हरिवंश राय बच्चन’ की सुप्रसिद्ध रचना मधुशाला के अंश हैं । आप इनका सु मधुर वचन जरूर करें ।

चलना हमारा काम है

-शिवमंगल सिंह ‘सुमन’

गति प्रबल पैरों में भरी

फिर क्यों रहूं दर दर खडा

जब आज मेरे सामने

है रास्ता इतना पडा

जब तक न मंजिल पा सकूँ,

तब तक मुझे न विराम है,

चलना हमारा काम है।

कुछ कह लिया, कुछ सुन लिया

कुछ बोझ अपना बँट गया

अच्छा हुआ, तुम मिल गई

कुछ रास्ता ही कट गया

क्या राह में परिचय कहूँ,

राही हमारा नाम है,

चलना हमारा काम है।

जीवन अपूर्ण लिए हुए

पाता कभी खोता कभी

आशा निराशा से घिरा,

हँसता कभी रोता कभी

गति-मति न हो अवरूद्ध,

इसका ध्यान आठो याम है,

चलना हमारा काम है।

इस विशद विश्व-प्रहार में

किसको नहीं बहना पडा

सुख-दुख हमारी ही तरह,

किसको नहीं सहना पडा

फिर व्यर्थ क्यों कहता फिरूँ,

मुझ पर विधाता वाम है,

चलना हमारा काम है।

मैं पूर्णता की खोज में

दर-दर भटकता ही रहा

प्रत्येक पग पर कुछ न कुछ

रोडा अटकता ही रहा

निराशा क्यों मुझे?

जीवन इसी का नाम है,

चलना हमारा काम है।

साथ में चलते रहे

कुछ बीच ही से फिर गए

गति न जीवन की रूकी

जो गिर गए सो गिर गए

रहे हर दम,

उसी की सफलता अभिराम है,

चलना हमारा काम है।